बारिश की बूंदे

अच्छी लगती है
मौसम की हर बारिश
बच्ची लगती है
जीवन की हर ख्वाहिश
ये पानी के बुलबुले हैं
जो उमंगों की फुहारों संग
उठते ही फूटते हैं
हजारों-हजार संवेदना की रुपहली-चादर पर
मन गुजरते हर मौसम की दहलीज से
गुजरता है पर
सच्ची-सी लगती है
जीवन की हर आतिश
गड़गड़ाते बादलों के बीच
आसुँओ की सेतु-धारा
जो तड़तड़ाती-फनफनाती
हुंकारती-फूंकारती
फैलती है पुरुषार्थ की जमीन पर
काले-केशों की घनमाला-सी अभिसारिका
जो बढ़ती तीव्र-बेसुध उन्माद-सी
सींचती है
प्यासी अमराई को
नदी-नालों की गहराई को
स्नेहहीन परछाई को
उमंगों के ह्रास को
जीवन के अवकाश को
हाँ अच्छी लगती है
मौसम की हर बारिश
हाँ बच्ची लगती है
जीवन की हर ख्वाहिश।

गाँव की ओर (रिवर्स माईग्रेशन)

सर पर गठरी तेज धुपहरी
रक्त निकलता, फूटा छाला
मन घबराये कदम बढ़ाये
कहाँ मिलेगी छांव
कैसे रखें कदम धरा पर
जलते मेरे पॉव...
हाय!जलते मेरे पॉव !
मैं भारत की सच्ची तस्वीर
फूट गई मेरी तकदीर
ए. सी. में रहने वालों
बड़ी बातें करने वालों
सुबह-शाम करके मजदूरी
तब खायेंगे रोटी पूरी
भूखे बच्चों को भेद रही जैसे, भीषण-गर्मी-तीर
मैं भारत का मजदूर-अधीर !
मन-संकल्प कहे यह पीर
चलो बढ़ चलो वीर-कबीर
राजमार्ग पर युगपथ-धीर
हे भारत की जननि के क्षीर
मत बहने दो अक्षु से नीर
मीलों के सफर को, क्षण-भर में चीर
भूल अरे पैरों के घाव
खून-सनी रोटी और पॉव
तुझे बुलाता तेरा गाँव !
जीवन में क्या खोया-पाया
क्या सपना लेकर आया था
सड़क किनारे ही मरना था
मैं गाँव छोड़कर आया था

जीवन-विपदा से मैं मजबूर
मैं भारत का बेघर-मजदूर
पथरिली पटरी पर चलकर
बिन पतवार चलाते नॉव
खून-सनी रोटी और पॉव
मुझे बुलाता मेरा गाँव।
जीवन की पाठशाला में
अक्षर-सारे जाने थे
भूख-प्यास मीलों का सफर
देनदारों के सर पर ताने थे
मिला-जुलाकर जो बच पाया
फटी-जेब में चार-आने थे
राह हमारी कोसों दूर
हम पथरिली सड़कों पर, चलने को मजबूर
मैं भारत का बेघर मजदूर
चलना है मुझे मीलों तक दूर

आशा अमरधन

हर बार एक, हर बार नया
जाने मैं कितनी दूर तक गया
भविष्य को देखा, भूत को खोया,
वर्तमान में ना जाने, क्या ले कर बोया !
छोटा सा सपना आँखों में संजोया,
यह ले कर मैं सारी रात ना सोया !
फिर एक दिन नसीब ने कहा,
तू किस्मत से आगे चल ।
भूल जा तू अपने बीते हुए पल,
नसीब को भला कोई बदल है पाया !!
वह सब उसने श्रम से दिखलाया!

डॉ. चंद्रप्रकाश तिवारी